चैत्र सुदि प्रतिपदि परमपूजनीय डॉ. हेडगेवार महाभागानां जन्म दिवसे यथानिश्चितं तदीय स्मृतिमन्दिरं समुद्घाटयत। अस्य महोत्सव कृते भारत वर्षस्य समस्त प्रदेशतः प्रतिनिधिभूताः सहस्रशः स्वयंसेवकधुरी नागपुरे संघकेन्द्रस्थाने सोत्साहं समायतन्। स्मृति-मन्दिरोद्घाटन दिने प्रातः सायंच वेदमंत्रोच्चारणपूर्वकं समुचितोपचितिः विहिता। सायंकाले सार्वजनीन महोत्सवावसरे चतुर्वेद पठनानन्तरं पूज्य चरणानां मंगलाशीर्वचनपत्रं मया सर्वेभ्यः श्रावयित्वा एतन्निमित्तं श्रीमद्भिः प्रेषितानां भूति-कुंकुम-मन्त्राक्षतानां समर्पणेनैव स्मृतिमन्दिरस्योद्घाटनं सञ्जातमिति प्रोद्घोषितम्। एवं विधेन विधिना स्मृतिमंदिरोद्घाटन महोत्सवः समपाद्यत।

अस्य महोत्सवस्य वृत्तान्तः विविध वृत्तपत्रेषु सविस्तरं प्रकाशमागतः। तानि वृत्तपत्रोद्धरणानि श्रीमता हरदासेन बालशास्त्रिणा पूज्य चरणानां निकटे प्रेषितानि स्युरिति आशासे।

कुशलमत्रत्यानां अस्माकं सर्वेषां भगवत्कृपाकर इतरत्र!

श्रीमज्जगद्गुरु कृपाभिलाषी चरणरजः

मा. स. गोळवलकर

(गोळवलकरोपाह्व सदाशिव सुतः माधवः)

इस पत्रकी स्मृति मरोलियो निकली पुस्तकाकार
बनी रहेगी।

प्रत्यक्ष समारोह का वृत्त तो आपको विदित हो गया होगा। उस समय उपस्थित नहीं हो सके तो आगे कभी अवसर निकालकर स्थानीय दर्शन अवश्य करें। आपकी भावुकताको अवश्य वहाँकी गुरुताका अनुभव प्राप्त होगा ऐसा मैं समझता हूँ।

अब अपने ग्रीष्मकालीन [illegible] प्रान्त प्रान्त में चलनेवाले हैं। सब कार्यों पर जाकर आनेका कार्यक्रम मरोलिये बनाया जा चुका है। तदनुसार दि ३०-५-८२ को मैं नागपुर से चलूँगा। पुनः दौरा कर नागपुर लौट आनेकी तारीख ८-६-८२ हो जावेगी।

शेष भगवत्कृपासे कुशल है। केवल पूज्य माताजी वृद्धावस्थाके कारण अत्यधिक शिथिल होकर शरीरकी अशक्तताके कारण बिछौनेपर ही पड़ी रहती हैं। 1

इतिशम्।

१३४ २४.४.८२

पूज्यपाद श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीकाञ्ची काम-कोटि पीठाधिप - जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य

स्वस्ति।

पूज्यपाद - श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीकाञ्ची - कामकोटि पीठाधिप - जगद्गुरु श्री शंकराचार्य चरणेषु सश्रद्ध प्रणतिततिपुरस्सरं सानन्दं निवेद्यते।